

कृषि कुंभ
हिंदी मासिक पत्रिका

खण्ड 04 भाग 02, (जुलाई, 2024)
पृष्ठ संख्या 09-11



जायद फसलों का कृषि में ऐतिहासिक संदर्भ और महत्व

पवन कुमार¹, अमित कुमार² एवं धीरज पंधाल¹
¹जिला विस्तार विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, जींद
²जिला विस्तार विशेषज्ञ, कृषि विज्ञान केंद्र, कैथल
चौधरी चरण सिंह हरियाणा कृषि विश्वविद्यालय, हिसार, भारत।

Email Id: -pkextension@hau.ac.in

भारत में मुख्य रूप से तीन फसलें होती हैं— खरीफ, रबी और जायद। जायद वर्ग की फसलों में तेज गर्मी और शुष्क हवाएँ सहन करने की अच्छी क्षमता होती हैं। उत्तर भारत में ये फसलें मुख्यतः मार्च-अप्रैल में बोई जाती हैं। उदाहरण: तरबूज, खीरा, खरबूजा ककड़ी, मूंग, उड़द, सूरजमुखी इत्यादि। यह फसलें मुख्य रूप से मार्च में बोई जाती हैं और जून में काटी जाती हैं।

कृषि में ऐतिहासिक संदर्भ और महत्व

जायद फसलें कृषि में एक महत्वपूर्ण स्थान रखती हैं, भारतीय कृषि के ऐतिहासिक संदर्भ में, जायद फसलों का महत्व अत्यधिक था। प्राचीन काल से ही भारतीय कृषि व्यवस्था में जायद फसलों की उत्पादन की प्रथा थी। इसका प्रमुख कारण था कि जायद वर्ग की फसलों में तेज गर्मी और शुष्क हवाएँ सहन करने की अच्छी क्षमता होती हैं।

इस ऐतिहासिक संदर्भ में, जायद फसलों का कृषि में महत्व यह भी है कि ये फसलें किसानों को अपनी आय का स्रोत प्रदान करती हैं, जो उनके आर्थिक संवर्धन में मदद करता है। अधिकांश जायद फसलें उच्च मूल्यवान होती हैं और इन्हें अच्छे मार्केट मूल्य मिलता है, जिससे किसानों की आर्थिक स्थिति में सुधार होती है।

जायद फसलों की विशेषताएँ

1. जायद फसलों की अवधि और समय: जायद फसलें कृषि में उन फसलों को कहते हैं जो वर्ष के दूसरे अवसानिक महीनों में उगाई जाती हैं। ये फसलें अक्सर बारिश के बाद के मौसम में उगाई जाती हैं, जब पर्याप्त मौसमी और जलवायु शर्तें उपलब्ध होती हैं।

जायद फसलों की अवधि सामान्यतः छोटी होती है और इसमें सब्जियों, दलहन, मोटा अनाज, आदि शामिल होते हैं। इसके साथ ही, जायद फसलें विभिन्न भागों में भी उगाई जा सकती हैं, जैसे की उत्तर भारत में इन फसलों का अवधान ज्यादा लंबा होता है।

2. जायद मौसम में उगाई जाने वाली फसलों की प्रकार: जायद मौसम में उगाई जाने वाली फसलें विभिन्न प्रकार की होती हैं और ये विभिन्न क्षेत्रों में उगाई जा सकती हैं। इनमें सब्जियां (जैसे तोमैटो, ककड़ी, गोभी, गाजर, शलजम), दलहन (मसूर, मूंग, उड़द, तिल) और मोटे अनाज (बाजरा, ज्वार, मक्का) शामिल होते हैं। इनके अलावा, उपजाऊ फल (जैसे अंगूर, संतरा, अमरूद) भी जायद मौसम में उगाए जा सकते हैं।

3. **जायद मौसम की जलवायु और मृदा की आवश्यकताएँ:** जायद मौसम की जलवायु और मृदा की आवश्यकताएँ फसलों के उत्पादन में महत्वपूर्ण होती हैं। इन्हें संतुलित रखना फसलों की उचित विकास और उत्पादन में मदद करता है। जायद फसलों के लिए उचित जलवायु और मृदा की आवश्यकताएँ निम्नलिखित हो सकती हैं:

जलवायु:

जायद मौसम में, फसलों को उचित तापमान, वायुशीतलता, और वर्षा की आवश्यकता होती है। सही जलवायु फसलों के अच्छे विकास और उत्पादन के लिए महत्वपूर्ण है।

मृदा:

फसलों के लिए उचित मृदा भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। यह फसलों को अच्छे पोषण और प्राकृतिक उपजाऊता प्रदान करता है। मृदा की उपयुक्त धारा, अच्छी फसलों के लिए अत्यंत आवश्यक होती है।

पोषक तत्वों की उपलब्धता:

जायद मौसम में फसलों के लिए मृदा में पोषक तत्वों की उपलब्धता भी महत्वपूर्ण होती है। उन्हें सही मात्रा में और समय पर प्रदान करना आवश्यक होता है।

इन सभी तत्वों का संतुलित होना फसलों के उत्पादन के लिए अत्यंत महत्वपूर्ण है। यदि इन्हें ध्यान में नहीं रखा जाता, तो यह फसलों के विकास और उत्पादन को प्रभावित कर सकता है।

किसानों के लिए जायद फसलों का महत्व

1. **आय की भरपूरता:** जायद फसलें किसानों के लिए आय की एक महत्वपूर्ण स्रोत होती हैं। इन्हें उगाने से किसानों को आर्थिक

सुरक्षा प्राप्त होती है, जो उन्हें उनके जीवन की बुनियादी आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद करती है। जायद फसलों का उत्पादन आमतौर पर बाजार में अधिक मांग होती है, जिससे किसान अधिक मूल्य प्राप्त कर सकते हैं। इससे उनकी आर्थिक स्थिति मजबूत होती है और उन्हें अपने परिवार की आर्थिक आवश्यकताओं को पूरा करने में मदद मिलती है। इसके अलावा, जायद फसलों का उत्पादन किसानों को अन्य आय स्रोतों के साथ भी संतुलित आर्थिक स्थिति में रखता है, जिससे वे आर्थिक असमर्थता की स्थिति से बच सकते हैं। इस प्रकार, जायद फसलें किसानों के लिए आय की भरपूरता को सुनिश्चित करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं।

2. **अल्प-कृषि भूमि का उपयोग:** जायद फसलें अल्प-कृषि भूमि के उपयोग में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये फसलें वर्ष के दूसरे अवसानीक महीनों में उगाई जाती हैं, जिससे उन्हें अल्प-कृषि भूमि के अनुकूल माना जाता है। इससे उत्पादकता बढ़ती है और यह भूमि भी अधिक उपयोगी हो जाती है। इसके अलावा, जायद फसलों की उचित खेती से भूमि की उपजाऊता भी बढ़ती है, जिससे किसानों को अधिक उत्पादकता और आय की संभावनाएँ प्राप्त होती हैं। इस प्रकार, जायद फसलें अल्प-कृषि भूमि का उपयोग करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जो किसानों को आर्थिक सुरक्षा प्रदान करती हैं और उन्हें समृद्धि की दिशा में आगे बढ़ने में मदद करती हैं।

3. **फसलों का विविधीकरण:** फसलों की विविधता को बढ़ाने में जायद फसलों का

महत्वपूर्ण योगदान है। ये अन्य फसलों के साथ आराम से उगाई जा सकती हैं, जिससे फसल की विविधता बढ़ती है। जायद फसलों का खर्च और समय भी कम होता है, जिससे किसानों को अधिक लाभ मिलता है। ये फसलें छोटे समय में उगाई जा सकती हैं, जिससे किसानों को अधिक आय मिलती है। इसके साथ ही, फसलों की कटाई के बाद, जायद फसलें अन्य मौसमी फसलों के लिए तैयारी करने में मदद करती हैं।

4. **मोनो-कृषि के संबंधित जोखिमों का सामना करना:** जायद फसलें मोनो-कृषि के संबंधित जोखिमों का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। मोनो-कृषि अकेली एक ही प्रकार की फसलों की खेती को संदर्भित करती है, जिससे किसानों की कमजोरी बढ़ जाती है। यह खेती किसानों को आर्थिक संकट की स्थिति में डाल सकती है, क्योंकि एक ही फसल के उत्पादन में अनुमानित प्राकृतिक आपदाओं या रोगों का खतरा बढ़ जाता है।

जायद फसलों का विविधता मोनो-कृषि के जोखिमों का सामना करने में मदद करती है, क्योंकि ये फसलें विभिन्न प्रकार की मौसमी और जलवायु परिस्थितियों के लिए समर्थ होती हैं। इससे किसानों की आर्थिक सुरक्षा बढ़ती है, क्योंकि वे अधिक उत्पादक और स्थिर आय स्रोतों को देख सकते हैं। साथ ही, जायद फसलें मोनो-कृषि के संबंधित जोखिमों को कम करने में भी मदद करती हैं, क्योंकि ये फसलें प्राकृतिक प्रतिरोधीता प्रदान करती हैं। एक ही प्रकार की फसलों के अनुसार, बीमारियों और कीटों का प्रसार होने की संभावना कम होती है, जो किसानों को

रोगों और कीटों से संघर्ष कम करने में मदद करता है।

इस प्रकार, जायद फसलें मोनो-कृषि के संबंधित जोखिमों का सामना करने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिससे किसानों को अधिक सुरक्षित और स्थिर उत्पादन की संभावनाएँ प्राप्त होती हैं।

5. **मृदा उर्वरता और पोषक तत्वों का चक्रवात:** जायद फसलें मृदा उर्वरता और पोषक तत्वों के चक्रवात को संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं। ये फसलें मृदा की उपजाऊता को बनाए रखती हैं और पोषक तत्वों को मृदा में पुनः प्राप्त करने में मदद करती हैं।

मृदा उर्वरता का चक्रवात उसी मृदा की जीवनता को बनाए रखता है जो फसलों के लिए आवश्यक है। ये फसलें मृदा के पोषक तत्वों को उपजाऊ बनाए रखने में मदद करती हैं, जिससे मृदा की उपजाऊता को बनाए रखा जा सकता है। इस चक्रवात में, फसलें मृदा के निर्णायक तत्वों को उपजाऊ बनाए रखने में मदद करती हैं, और मृदा को आर्थिक और पर्यावरणीय रूप से स्थिर बनाए रखती हैं। क्योंकि ये फसलें मृदा को पुनः प्राप्त करने और उसे पुनर्जीवित करने में मदद करती हैं। इस प्रकार, जायद फसलें मृदा उर्वरता और पोषक तत्वों के चक्रवात को संतुलित रखने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाती हैं, जिससे मृदा की उपजाऊता और खेती की उत्पादकता को बनाए रखा जा सकता है।

इस प्रकार, जायद फसलों का कृषि में ऐतिहासिक संदर्भ और महत्व उनके अद्भुत संदर्भ में दिखता है और इस से स्पष्ट होता है कि यह किसानों के जीवन में एक महत्वपूर्ण भूमिका निभाती है।